

उपभोक्तावादी जीवन—शैली और गांधीय विकल्प

सारांश

आज विश्व गम्भीर, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं से ही नहीं बल्कि प्रकृति और संस्कृति के क्षरण की समस्या से भी जुझ रहा है। जिसका कारण उपभोक्तावादी जीवन—शैली है। इससे मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, आर्थिक पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़े है। इस भोगवादी जीवन शैली व पाश्चात्य जीवन शैली का निदान गाँधी की सादा जीवन व उच्च विचार दर्शन में परिलक्षित होते है। जो मनुष्य को सही दिशा दे सकते है। जिससे मनुष्य न केवल तनावमुक्त जीवन जी सकेगा वरन सुखी व खुशहाल जीवन भी जी सकेगा तथा पर्यावरण समस्याओं में भी कमी आयेगी। संक्षेप में गांधी के विचारों में मोटा खाओ, मोटा पहनो, मोटा सोचो उनके दर्शन का सार है।

मुख्य शब्द : उपभोक्तावादी, तनावमुक्त, पर्यावरण, उच्च विचार, गांधीय विकल्प, बौद्धिक पर्यावरण।

प्रस्तावना

आज विश्व गम्भीर, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं से ही नहीं बल्कि प्रकृति और संस्कृति के क्षरण की आन्तरिक एवं दूरगामी प्रभावशाली परिस्थिति से भी जुझ रहा है। गरीबी, बेकारी, शोषण, दमन, संघर्ष तथा विघटन की स्थिति में तो व्यवस्था परिवर्तन द्वारा शीघ्र सुधार लाया भी जा सकता है किन्तु भोगवादी जीवन शैली अपनाने के कारण पर्यावरण तथा नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पहुंचाया जा रही क्षति भरपाई तो तभी की जा सकती है जबकि हम सही जीवन दर्शन पर आधारित जीवन मूल्यों को अपना लें।¹ गांधी दर्शन को अपनाने से ही मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती है और मनुष्यो का जीवन लक्ष्यमुखी हो सकता है। गांधी मानवीय मूल्यों को बहुत महत्व देते थे।

अध्ययन का उद्देश्य

वैश्विक आर्थिक असंतुलन वर्तमान में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर यह शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है कि आज आर्थिक पर्यावरण को गांधीय विकल्प से सुधारा जा सकता है।

उपभोक्तावादी जीवन—शैली के दुष्प्रभाव

मानवीय पर्यावरण पर दुष्प्रभाव

मनुष्य का सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, आर्थिक पर्यावरण एक दूसरे को प्रभावित करता है। वर्तमान में मानवीय पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। जो मनुष्य के विकास में बाधा पहुंचा रहा है मनुष्य का जीवन भोगवादी जीवन शैली का दास बनता जा रहा है। इसका एक उदाहरण मनुष्य के जीवन में बढ़ती गेजेट्स की भूमिका है। वर्तमान में मनुष्य गेजेट्स का गुलाम होता जा रहा है। मनुष्य के घर में सम्पूर्ण विलासिता व उपभोग की सामग्री हैं। घर में वो तमाम भौतिक सुविधायें जो मनुष्य को आरामदायक बनाती है, सुशोभित कर रही हैं। उसका रसोइघर पूरी तरह मशीनीकृत हो चुका है इन मशीनों के कारण मनुष्य के शारीरिक श्रम में कमी आयी है। वह धीरे-धीरे गेजेट्स पर निर्भर होता जा रहा है। श्रम की कमी से मनुष्य को बीमारियों ने घेर लिया है। मोटापा, कैंसर, डाइबिटीज व थाइरॉइड जैसी बीमारियों ने हर परिवार में जगह बना ली है। यद्यपि इन बीमारियों का एक कारण वर्तमान का प्रदूषित वातावरण भी है। जिससे मनुष्य अस्वस्थ रहने लगा है। उसके व्यक्तित्व के प्रभावित होने से पारिवारिक व सामाजिक पर्यावरण बिगड़ने लगा है।

बौद्धिक पर्यावरण पर दुष्प्रभाव

गेजेट्स से मनुष्य का बौद्धिक पर्यावरण भी अवरूद्ध हुआ है। कम्प्यूटर, सेलफोन, मोबाइल, सोशल मीडिया ने उसकी बौद्धिकता को प्रभावित किया। प्राकृतिक बौद्धिकता का स्थान कृत्रिम बौद्धिकता ने ले लिया है। कम्प्यूटरीकरण से जहाँ उसमें तार्किक व विश्लेषणात्मक क्षमता प्रभावित हुयी है। वही सेलफोन,



मीनू शर्मा

वरिष्ठ अध्यापक,
सामाजिक विज्ञान,
रा0 उ0 मा0 विद्यालय,
बौली, सर्वाई माधोपुर

सोशलमीडिया, ने उसे समाज से दूर कर दिया है। जो समय मनुष्य अपने परिवार, मित्रों व रिश्तेदारों के साथ व्यतीत करता था आज वह धीरे-धीरे एकाकी हो गया है। जो उसके सामाजिक पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है। समाज से विमुखता उसे आत्महत्या को प्रेरित कर रही है। उससे सहनशीलता, धैर्य, संघर्ष के भाव कम होने लगे हैं।

भोगवादी जीवन शैली के दुष्प्रभाव

भोगवादी जीवन शैली मनुष्य के मानवीय मूल्यों को प्रभावित कर रही है जो स्वस्थ आर्थिक पर्यावरण में बाधक है आज का मनुष्य आर्थिक होता जा रहा है। उसे संस्कारों में सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक की जगह आर्थिक बनने के लिये प्रेरित किया जा रहा है जिससे मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रभावित हुआ है। इस आर्थिक दौड़ में न स्वयं के लिये समय है न परिवार के लिये। धन की भूख व आवश्यकताओं में वृद्धि ने उसे अनैतिक, भ्रष्ट, विलासी व स्वार्थी बना दिया है।

पाश्चात्य जीवन शैली के के दुष्प्रभाव

उसकी जीवन शैली में पाश्चात्य रंग हो गया है। खान-पान में पिज्जा, बर्गर, पहनावे में पाश्चात्य संस्कृति आ गई है। अत्यधिक महत्वाकांक्षी जीवन ने उसे कुटित, चिन्तित व तनाव ग्रस्त बना दिया है। न केवल विकासशील देश वरन विकसित देश भी इस समस्या के परिणामो से समस्याग्रस्त है एक मात्र विकल्प के रूप में गांधी याद आते हैं।

गाँधी की सादा जीवन उच्च विचार दर्शन से समस्या का समाधान

गांधी का आदर्श सादा जीवन उच्च विचार शैली उपर्युक्त समस्या का समाधान करने में प्रतीत होती है। गांधीजी का यह आदर्श विचार यंग इंडिया में 1927 में, हरिजन में 1934 में लिखा है उन्होंने कहा वे आवश्यकताओं की अनावश्यक वृद्धि के विरुद्ध हैं, जिस क्षण मनुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं में वृद्धि करना चाहता है, उसी क्षण वह सरल जीवन व उच्च विचार के आदर्श के पालन से हट जाता है। मनुष्य का सुख वस्तुतः सन्तोष में निहित है जो असन्तुष्ट रहता है, वह अपनी कामनाओं का दास बन जाता है। मनुष्य का स्वतंत्र रहना या दास बनना उसकी मुट्ठी में है।¹ गाँधी उपनिषद की इस उक्ति पर विश्वास करते थे कि हम त्याग द्वारा भोग करे। उनके कहे अनुसार मानव शरीर का एकमात्र उद्देश्य सेवा है, भोग कदापि नहीं। सुखी जीवन का रहस्य त्याग में है, त्याग ही जीवन है। भोग का अर्थ तो मृत्यु है।² गांधी ने अपने विचारों में वैरागियों का जीवन जीने की सलाह नहीं दी, उनका कहना था कि मानव जीवन सुखद और उनकी जीवन-यात्रा सुगम हो, साथ ही उन्होंने दो बातें कहीं—प्रथम समस्त समाज का अधिकतम कल्याण, दूसरा हमारे जीवन का उद्देश्य जैसा लुई फिशर कहते हैं लोग अच्छी तरह रहें, वे कम स्वार्थी हों, कम लोभी हों, कम धनोन्मादी हो, कम स्वकेन्द्रित हों।³ भोगवादी संस्कृति की समस्या का हल गाँधी के अपरिगृह सिद्धान्त में मिलता है। आज की जो जरूरत हो बस उतना ही संग्रह करना चाहिये, उनका कहना था कि हमें किसी भी वस्तु को अपनी सम्पत्ति के रूप में नहीं मानना चाहिये बल्कि हमें न्यूनतम वस्तु का उपभोग ईश्वरीय

उपहार के रूप में करना चाहिये। गांधी ने कहा परमेश्वर पर विश्वास रखने वाला यह मानता है कि जब जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, तब वह मिल ही जायेगी। इस कारण वह किसी प्रकार के संग्रह में पड़ता ही नहीं है। भारतीय आदर्श के प्रति निष्ठावान गांधी का मत है "देख पाते हैं कि मन चंचल पक्षी के समान है, जितना अधिक इसको मिलता है, उतना ही अधिक यह चाहता है और फिर भी असंतुष्ट रहता है। जितना ही हम अपनी वासनाओं में डूबते हैं, उतनी ही वे अनियंत्रित हो जाती हैं। उन्होंने आगे कहा कि अतएव हमारे पूर्वजों ने विषयभोग की एक सीमा निर्धारित कर दी। उन्हें ज्ञात था कि सुख बहुलाशतः मानसिक स्थिति है। कोई व्यक्ति धनी होने के कारण अनिवार्यतः सुखी नहीं होता या गरीब होने के कारण ही दुखी नहीं होता। प्रायः देखा जाता है कि धनी दुखी है और गरीब सुखी। इस सबका निरीक्षण करके ही हमारे पूर्वजों ने हमें भोग विलास से दूर रहने का परामर्श दिया था। ऐसा नहीं था कि वे यंत्रों का आविष्कार करना नहीं जानते थे किन्तु हमारे पूर्वज जानते थे कि यदि हमको ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति के पीछे अपना मन दौड़ाया तो हम गुलाम हो जायेंगे और अपनी नैतिक प्रकृति खो बैठेंगे। अतएव पर्याप्त विचार-विमर्श के बाद उन्होंने निश्चित किया कि हमें वही करना चाहिये जो हम अपने हाथों और पैरों से कर सकते हैं। अन्य स्थान पर गांधी ने कहा मैं इस पर विश्वास नहीं करता कि आवश्यकताओं की वृद्धि और उनकी पूर्ति के लिये यंत्रों के प्रयोग द्वारा विश्व अपने लक्ष्य की ओर एक कदम भी आगे बढ़ सका है। दूरी और समय के व्यवधान को नष्ट कर अपनी पाशिवक क्षुधाओं को बढ़ाने और उनकी तृप्ति के लिये पृथ्वी के इस छोर से उस छोर तक भटकने के पागलपन के सिद्धान्त से मैं पूरे अन्तःकरण से घृणा करता हूँ। गांधी की दृष्टि में समस्त आर्थिक व्याधियों की जड़ है आधुनिक सभ्यता की सदा बढ़ती जाने वाली "और आगे और आगे" की प्रवृत्ति। वे थमने के लिये सचेत करते हैं और जैसा कि लुई फिशर ने कहा है, कि "रुको और बचो," उनके अर्थ दर्शन का प्रमुख लक्षण है, इसीलिये उनका आदर्श है "सादा जीवन और उच्च विचार" के आदर्श इसीलिये वे आवश्यकताओं की अनावश्यक वृद्धि के विरुद्ध हैं। उनका कथन है जिस क्षण मनुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं में वृद्धि करना चाहता है, उसी क्षण वह 'सरल जीवन एवं उच्च विचार' के आदर्श के पालन से च्युत हो जाता है। इतिहास में इसके प्रचुर प्रमाण उपलब्ध हैं। मनुष्य का सुख वस्तुतः सन्तोष में निहित है। जो असन्तुष्ट रहता है वह अपनी कामनाओं का दास बन जाता है। सभी सन्तों ने उच्च स्वर में घोषित किया है कि मनुष्य अपना निकृष्टतम शत्रु भी बन सकता और उत्कृष्टतम मित्र भी। स्वतन्त्र रहना या दास बन जाना उसकी मुट्ठी में है।⁴ गांधी ने भोग-विलासता के प्रति मनुष्य की बढ़ती प्रवृत्ति के संबंध में कहा कि हमारे पुरखों ने हमें भोग-विलास से और ऐश आराम से दूर रहने का उपदेश दिया। हमने हजारों वर्ष पहले के हल से ही काम चलाया है उनका कहना था कि हमारे यहाँ जीवन नाशक स्पर्धा की प्रणाली नहीं रही इस तरह की प्रणाली समाज में तनाव बढ़ाती है। तथा मनुष्य के पर्यावरण को भी

प्रभावित करती हैं।⁶ उनका मत है कि मनुष्य की वृत्तियाँ चंचल हैं उसका मन बेकार की दौड़-धूप किया करता है। उसका शरीर जैसे-जैसे ज्यादा दिया जाए वैसे-वैसे ज्यादा माँगता है। ज्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता। भोग भोगने से भोग की इच्छा बढ़ती जाती है। इसलिए हमारे पुरखों ने भोग की हद बाँध दी। यह हद आज भी बाँधे जाने की जरूरत है।⁷

निष्कर्ष

गांधी का मत था कि मैं यह नहीं मानता कि इच्छाओं को बढ़ाने या उनकी पूर्ति के साधन जुटाने से संसार अपने लक्ष्य की ओर एक कदम भी बढ़ा पाएगा।⁸ उन्होंने आगे कहा कि घर की सादगी, वस्त्र की सादगी और रहन-सहन की सादगी को बढ़ाकर, एक शब्द में कहूँ, और हमारे विषय से संबंध रखने वाली भाषा में कहूँ, तो मैंने अपने जीवन में उत्तरोत्तर खालीपन को बढ़ाकर आकाश के साथ सीधा संबंध बढ़ाया है। यह भी कहा जा सकता है कि जैसे-जैसे यह संबंध बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा आरोग्य भी बढ़ता गया, मेरी शांति बढ़ती गई, संतोष बढ़ता गया और धनेच्छा बिलकुल मंद पड़ती गई। जिसने आकाश के साथ संबंध जोड़ा है, उसके पास कुछ नहीं है, और सब-कुछ है। अंत में तो मनुष्य उतने का ही मालिक है न, जितने का वह प्रतिदिन उपयोग कर सकता है और जितने को वह पचा सकता है? इसलिए उसके उपयोग से वह आगे बढ़ता है। सब कोई ऐसा करे तो इस आकाश-व्यापी जगत् में सबके लिए स्थान रहे और किसी को तंगी का अनुभव ही न हो।⁹

गांधी के उक्त विचारों में प्रतीत होता है कि वर्तमान में विलासितापूर्ण जीवन ही मनुष्य की समस्याओं

की मूल जड़ है। जिसे गांधी की आध्यात्मिक, सादा जीवन व उच्च विचार रखने वाली विचारधारा ही मनुष्य को सही दिशा दे सकती है। जिससे मनुष्य न केवल तनावमुक्त जीवन जी सकेगा वरन सुखी व खुशहाल जीवन भी जी सकेगा तथा पर्यावरण समस्याओं में भी कमी आयेगी। गांधी के विचारों में मोटा खाओ, मोटा पहनो, मोटा सोचो कई समस्याओं का समाधान कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइन्स, पृ.85 राजनीतिक विज्ञान परिषद की अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका जुन 1995,
2. गांधी : हरिजन 01.02.1942 उद्धृत डा महादेव प्रसाद: महात्मा गांधी का समाज-दर्शन, पृ. 210 हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 2002
3. गांधी: हरिजन 24.02.1946 उद्धृत उपर्युक्त,
4. गांधी एण्ड स्टालिन, पृ. 146 उद्धृत, सन्दर्भ संख्या 2 पृ. 212
5. गांधी : हरिजन 01.02.1942 उद्धृत पूर्वोक्त
6. हिन्द स्वराज्य : अध्याय 13 से सर्वोदय में पृ. 45-46 पर उद्धृत
7. गांधी: हिन्द स्वराज, अक्टूबर 1982, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, पृ.62, वाराणसी उद्धृत गांधी संचयन, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ.124
8. गांधी :यंग इंडिया, 1927 उद्धृत उपर्युक्त गांधी: आरोग्य की कुंजी, पृ.48 आवृत्ति 2011 उद्धृत उपर्युक्त पृ.127